रिकॉर्ड:- तकदीर जगा कर आई...... ओम शान्ती प्रात:क्लास 12-1-1967

यह तुम बच्चे तकदीर बना रहे हो। गीता में श्रीकृष्ण का नाम दे दिया है और कहते हैं भगवानीवाच्य मैं तुमको राजयोग सिखलाता हूँ। अब कृष्ण भगवानोवाच्य तो है नही। यह श्रीकृष्ण की ऐम आबजैक्ट है। फिर है शिव भगवान ही वाच्य-के मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। तो पहले जरूर प्रिन्स कृष्ण बनेंगे।

बाकी कृष्ण भगवानोवाच्य है नही। कृष्ण तुम बच्चों की ऐम आब्जैक्ट है। यह पाठशाला है भगवान पढ़ाते हैं। तुम सबकी ऐम प्रिन्स प्रिन्सेज़ बनने की ऐम ऑब्जैक्ट है। मनुष्यों ने फिर कृष्ण भगवान को भूल कर कृष्ण का नाम लगा दिया है। कृष्ण ने जो अपना पद गँवाया है वो इस राजयोग से पाया है। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के भी अन्त में मैं तुमको यह ज्ञान सुनाता हूँ फिर से भी कृष्ण बनाने लिये। तो मनुष्यों को भी भूल बतानी है। कृष्ण तो ऐम आब्जैक्ट है। इस पाठशाला का टीचर कृष्ण नही है। इस पाठशाला का टीचर श्री-2शिव बाबा है जो देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं। परन्तु प्रिन्स तो बहुत बनने हैं नां।

जब कि है ही राजयोग। बेगर टू प्रिन्स। बाप बैठ समझाते हैं कृष्ण के बहुत जन्मों के भी अन्त के जन्म में आकर जो पतित बन गया है उनको पावन बनाता हूँ। तुम भी कहते हो हम आये हैं तकदीर बनाने। आत्मा जानती है हम परमपिता परमात्मा से अब तकदीर बनाने आये हैं। यह है प्रिन्स प्रिन्सेज़ बनने की तकदीर। राजयोग है नां। शिव बाबा द्वारा पहले-2स्वर्ग के दीपते कृष्ण और राधा निकलते हैं। यह जो पत्ते बनाये हैं ठीक हैं। समझाने लिये अच्छे हैं। गीता के ज्ञान से ही तुम तकदीर बनाते हो। तकदीर थी सो फिर फूट गई। बहुत जन्मों के अन्त में तुम बिलकुल तमोप्रधान, बेगर बन गये। अब फिर प्रिन्स बनना है।

ऐम आब्जैक्ट ही है राजयोग। फिर चाहे ल.न. को दिखाओं या कृष्ण राधा को। पहले तो जरूर राधा कृष्ण ही बनेंगे। फिर इनकी भी राजधानी चलती है। सिर्फ एक ही तो नही होंगे नां। स्वयंवर बाद राधा कृष्ण सो फिर ल.न. बनते हैं। नर से प्रिन्स वा नर से नारायण बनना बात एक ही है। है छोटी सी भूल। उससे ही सारा खोखला हो गया है। कहाँ परमपिता परमात्मा की बायोग्राफी कहाँ श्रीकृष्ण की बायोग्राफी। वो बिलकुल ही पुनर्जन्म रहित, वो पूरे 84जन्म लेते हैं। ऐज (आयू) तो शुरू से ही लेकर मिलेंगे नां। 25, 30वर्ष बाद शादी होती होगी। तो यह पत्ते पर दिखाना ठीक है। समझाने के लिये अच्छा है। तो यह भी तुमको समझाना है कि यह गीता पाठशाला है। दूसरी कोई चीज़ नही है। भगवान बैठ राजयोग सिखाते हैं जिसका नाम गीता रख दिया है। कोई भी धर्म स्थापन होता है तो धर्म शास्त्र जरूर चाहिये नां। भक्ति मार्ग में सबके धर्म शास्त्र हैं। तुम बच्चे जानते हो यह ल.न. स्वर्ग के मालिक थे। जरूर संगम युग पर ही स्थापन हुआ होगा। इसलिये संगम युग पुरुषोत्तम युग कहा जाता है। आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होती है। बाकी और सब धर्म विनाश हो जाते हैं। लिखा हुआ भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं। सतयुग में बरोबर एक ही धर्म था। वो हिस्ट्री जाग्राफी भी जरूर फिर से रिपीट होनी है। अच्छी चीज के ही लिये कहा जाता है स्वर्ग की स्थापना होगी। जिसमें ल.न. का राज्य होगा। गाते भी हैं जमना के कण्ठे पर राज्य था। परिस्तान था। अभी तो कब्रिस्तान है। सभी काम चिता पर बैठ कर भस्म हो जावेंगे। कहते भी हैं यह कब्रदाखल हुआ। समाधियें आद भी बनाते हैं नां। जैसे कब्र बनाते हैं वैसे ही समाधी कोई किस प्रकार की बनाते हैं कोई किस प्रकार की बनाते हैं। मुसलमानों की मसजिदें भी अनेक प्रकार की होती हैं। छोटी-2समाधियां बना देते हैं। यह सब कब्रें, समाधियां, मसजिदें आद फिर थोड़ी होंगी। फिर यह तब बनेंगी जब इनका राज्य होगा। सतयुग में भी फिर से तुम बनावेंगे। ऐसे नही कि कोई नीचे से सोने की द्वारका यां लंका निकल आवेगी। द्वारका हो सकती है। लंका तो नही होगी। गोल्डन ऐज़ कहा जाता है राम राज्य को। सच्चा सोना जो था वो तो सब वो लूट गये। तुम समझाते हो भारत कितना धनवान था। अब तुम कंगाल हो। कंगाल अक्षर लिखना कोई बड़ी बात नही है। यह तो कोई-2 मगज़खोर होते हैं जो कहते हैं। तुम समझा सकते हो सतयुग में एक ही धर्म था। वहाँ और कोई धर्म हो नही सकता है। कई कहते हैं यह कैसे हो सकता है। क्या कोई सिर्फ देवताएं

ही होंगे। अनेक मत मतान्तर हैं नां, एक की मत नहीं मिलती दूसरे से। कितना बड़ा ड्रामा है। कितने एक्टर्स हैं। यह सारा बुद्धि में चक्र लगाना चाहिये। खुशी रहनी चाहिये। तुम्हारा ऐम आब्जेक्ट तो ऊँचा है नां हम मनुष्य से देवता वा स्वर्गवासी बनते हैं। यह भी सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो कि स्वर्ग की स्थापना हो रही है। यह भी सदैव याद रहे तो हर्षित मुख अवस्था रहे। परन्तु माया घड़ी-2 भुला देती है। तकदीर नही है तो सुधरते ही नही है। झूठ बोलनें की आदत आधा कल्प से पड़ी हुई है। वो निकलती ही नही है। झूठ को भी खज़ाना समझ कर रखा है। तो समझा जाता है इनकी तकदीर ऐसी है। बाप को याद ही नही करते है। याद भी तब रहे जब कि सारा ममत्व निकल जाये सारी दुनिया से वैराग हो। मित्र सम्बन्धी आद को जैसे देखते हुये भी देखते नही है। जानते हो यह सब नर्कवासी कब्रिस्तानी है। यह सब खत्म हो जाने है। इसलिये शान्ती धाम सुख धाम को ही याद करते है। हम कल स्वर्गवासी थे राज्य करते थे। वो गुमा लिया है फिर हम राज्य पाते है। कहते भी है ब्रह्मा का दिन और रात। परन्तु इसका ज्ञान विदवान आदमें भी कुछ नही है। शास्त्र भी कितने ढेर पढ़ते रहते है। एक चन्द्रकान्त का भी नाम वेदान्त रख दिया है। इसमें है सारी कथा बटुक की। बटुक बच्चे को कहा जाता है। कृष्ण तो मुडमुड़ नही है। वो तो कितना बड़ा श्री नारायण बना है। बच्चे अभी समझते है भक्ति मार्ग में कितना भटकना पैसे बरबाद करना होता है। चलाते ही रहते है मिलता कुछ भी नही है। आत्मा पुकारती है बाबा आओ सुख धाम ले चलो। सो भी अन्त में जब बहुत दुख होता है तब याद करती है। तुम देखते हो अभी यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अभी हमारा यह अन्तिम जन्म है। इसीमें हमको सारी नालेज मिली है। नालेज पूरी धारण करनी है। अधूरी भी बहुतों की आयु जावेगी। अर्थ क्विक आद अचानक होते है नां। पाकिस्तान के पार्टीशन में कितने करोड़ों मरे होंगे। तुम बच्चों को शुरू से लेकर अन्त तक मालूम पड़ा है। बाकी भी जो रहा हुआ होगा वो मालूम पड़ जावेगा। सिर्फ ऐ सोम नाथ का मन्दिर तो सोने आद का नही होगा नां। और भी बहुतों के महल, मन्दिर आद होंगे नां। सोनें के। फिर क्या होता है, कहां गुम हो जाता है। निकलता ही नही है। अन्दर सड़ जाता है। क्या होता है? आगे चल कर तुमको पता पड़ता जावेगा। कहते है सोनें की दवारका लंका नीचे चली गई। अब तुम कहेंगे ड्रामा में वो नीचे चली गई। फिर चक्र फिरेगा तो ऊपर आवेगी। सो भी फिर से बननी होगी नां। यह चक्र बुद्धि में सिमरण करते बड़ी खुशी रहनी चाहिये। यह चित्र तो पाकिट में रख देना चाहिये। यह बहुत सर्विस (मेडल) लायक है। परन्तु इतनी सर्विस कोई करते नही है। ट्रेन में भी बहुत सर्विस कर सकते है। परन्तु कोई भी समाचार लिखते नही है कि ट्रेन में क्या सर्विस की। थर्ड क्लास में भी सर्विस बहुत अच्छी हो सकती है। जिन्होनें कल्प पहले समझा है जो मनुष्य से देवता बने होंगे वो ही समझेंगे। मनुष्य से देवता गाया जाता है। ऐसे नही कहेंगे कि मनुष्य से क्रिश्चन, वां मनुष्य से सिख। नही वो तो सब खत्म हो जाना है। मनुष्य से देवता बनें अर्थात आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना होना। बाकी सब अपने-2 धर्म में चले गये। झाड़ में दिखाया जाता है फलाने-2 धर्म फिर कब स्थापन होंगे। देवतायें हिन्दु बन गये है। हिन्दु से फिर और-2 धर्म में कनवर्ट हो गये है। वो भी बहुत ही निकलेंगे। जो अपने श्रेष्ठ से श्रेष्ठ धर्म को छोड़ कर थर्ड क्लास में जाकर प्रवेश हुये है। वो भी निकल पड़ेंगे। पीछे थोड़ा समझेंगे प्रजा में आ जावेंगे। देवी देवता धर्म में सब थोड़ेही आवेंगे। सब अपने-2 धर्म में चले जावेंगे। तुम्हारी बुद्धि में यह सब बातें है। दुनिया मैं-मैं-2 करते रहते है। अनाज के लिये कितना फिकर रखते है। बड़ी-2 मशीन्स लगाते है। बनता कुछ भी नही है। श्रेष्ठ को तमोप्रधान बनना ही है। सीढ़ी नीचे उतरनी ही है। ड्रामा में भी नूंध है वो होता ही रहता है। फिर नई दुनिया की स्थापना भी ही है। साधारण प्रजा भी तो बननी है नां। मकान आद साधारण मनुष्य ही बनाते है नां। राजा बनने वाले तो मकान बनाने की इनवेंशन नही करेंगे नां। यह फिर इनका पार्ट है। सांइस जो अभी सीख रहे है 9 वर्ष में बहुत होशियार हो जावेंगे। जिससे फिर वहां बहुत अच्छी-2 चीजें बनेंगी। यह सांइस वहां सुख देने

वासीहो जावेगी। यहां तो सुख थोड़ा है दुख बहुत है। इस साईंस को निकले 50 60 वर्ष हुआ है। आगे तो फोन बिजली, गैस आद कुछ भी नहीथा। 50 60 वर्ष में क्या हो गया है। वहां तो फिर सिर्फ सीरदायें चलेंगे। जल्दी-2काम होता जावेगा। यहां भी देखो मकान कैसे बनते है। सब कुछ रेडी रहता है। कितनी मारिस्यां बनाते है। वहां तो ऐसे नही होगा। वहां तो ऐसे नही होगा। वहां तो सबकी अपनी-2 खेती बाड़ी होती है। टैक्स आदकुछ नहीं पड़ेगा। वहां तो बेशुमार धन होता है। जमीन भी ढेर होती है। नदियां तो सब होंगी। बाकी नालें नही होंगी जो बाद में खोदे जाते है। तो बच्चों को अन्दर में कितना खुश रहना चाहिये। हमको डबल ईंजिन मिला हुआ है। पहाड़ी पर ट्रेन को डबल ईंजिन मिलती है। तुम बच्चे भी उंगली देते हो ना। तुम हो कितने थोड़े। तुम्हारी महिमा भी गाई हुई है। तुम जानते हो हम बाबा के खिदमतगार है। खिदमत कर रहे है। बाबा भी खिदमत करने आते है। एक धर्म की स्थापना अनेक धर्मों का विनाश करवा देते हैं। थोड़ा आगे चल कर देखेंगे कि बहुत हंगामें होंगें। अभी भी डर रहता है कि कहीं लड़ाई का बाम्बस नां गिरा देवे। परन्तु नहीं विवेक कहते है कि अभी देर है। चिंगारी तो बहुत लगती रहती है। दू-दू आपस में लड़ते रहते है। बच्चे जानते है पुरानी दुनिया खत्म हो जानी है। फिर हम अपने घर चले जावेंगे। अभी 8, का चक्र पूरा हुआ है। दसवें इकठे चले जावेंगे तुम्हारे में भी यह थोड़े हैं जिनको कोई-2यह याद पड़ता है। समझा, जाता है अभी स्थापना में देरी है। ड्रामा अनुसार जो चुस्त है कोई सुस्त है। यह तो होता ही है। चुस्त स्टुडन्टस अच्छी मार्क्स से पास हो जावेंगे। सुस्त जो होंगे उनका तो सारा दिन लड़ना झगड़ना ही लगा रहता है। बाप को याद ही नही करते है। सारा दिन मित्र सम्बन्धी ही बहुत याद आते रहते है। यहां तो सब कुछ भी भूल जाना होता है। हम आत्मा हैं। यह शरीर रूपी दुम्ब लटका हुआ है। हम कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे फिर यह दुम्ब छूट जावेगा। यह फिकर है कर्मातीत अवस्था हो जावें तो यह शरीर खत्म हो जावें, हम श्याम से सुन्दर बन जावें। मेहनत तो करनी है ना। प्रदर्शनी में भी देखो कितनी मेहनत करते है। महेन्द्र ने कितनी हिम्मत दिखाई है। अकेले कितनी हिम्मत से प्रदर्शनी की है। ******************************** मेहनत का फल भी तो मिलेगा ना। एक ने कितनी कमाल की है। कितनों का कल्याण किया है। मित्र सम्बन्धीयों आद की मदद से ही इतना काम किया है। कमाल ही है। ऐसे कोई ने काम किया नां होगा। मित्र सम्बन्धियों आदको समझाते रहते है यह पैसे आद इस काम में लगा दो। रख कर क्या करोगे? सब लिखते है बाबा कमाल की है। सैन्टर भी खोला है अपनी हिम्मत से। कितनों का भाग्य बनाया है। ऐसे 5, 7निकलें तो कितनी सर्विस हो जावें। कोई-2वो बहुत मनहूस होते है। फिर समझा जाता है इनकी तकदीर में ही नही है। समझते नही विनाश सामनें खड़ा है। कुछ तो कर लेंगे। अभी मनुष्य जो दान करेंगे ईश्वर अर्थ कुछ भी मिलेगा नही। ईश्वर तो अभी आया हुआ है। स्वर्ग की बादशाही देने लिये। इन दान पुण्य करने वाली को कुछ भी मिलेगा नही। ड्रामा अनुसार जिन्होंने अपना तन मन धनसफल किया था वो ही कर रहे है। तकदीर में नही है तो समझते भी नही है। तुम जानते हो वो भी ब्राहमण हैं। हम भी ब्राहमण हैं। प्रजापिता ब्रहमा कुमार कुमारियां इतने ढेर ब्राहमण है। वो है कुखवंशावली। तुम हो मुखवंशावली। यह जो कहते हो फलाना स्वर्गवासी हुआ। यां ज्योती ज्योत समाया, परन्तु तुम समझाते हो कोई भी जा नही सकते है। यह है ही हेल। नर्क। तो पुनर्जन्म भी जरूर नर्क में ही लेना है। शिव बाबा अवतार आकर स्वर्ग की स्थापना करते है। शिव जयन्ती भी संगम पर ही होती है। अब स्वर्ग में जाने लिये बाप का मन्त्र मिलता है मनमनाभव। मुझे याद करो तो तुम पवित्र बनकर पवित्र दुनिया का मालिक बन जावेंगे। ऐसे युक्ति से पर्चे छपाने चाहिये। दुनिया में मरते तो बहुत ही है। कहीं भी कोई मरते है तो वहां पर जाकर बांटने चाहिये। बापखुद आते है तब ही पुरानी दुनिया का बिनाश होता है। और उसके बाद स्वर्ग के द्वार खुलते है। 5000 पहले भी भारत सुख धाम था। बाकी सब शान्ती धाम में थे। उसे सतयुग को कहा जाता है। उस